आपस में सलाम को फैलाओ

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

'नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.'

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

{१} बुखारी व मुस्लिम; अब्दुल्लाह बिन उमर रदी.

खुलासा- रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم से एक आदमी ने पूछा इस्लाम का कौन सा काम बेहतर है? आपने फरमाया गरीबों मिस्कीनों को खाना खिलाना और हर मुसलमान को सलाम करना, चाहे तू उसे पहचानता हो या ना पहचानता हो (यानी पहले से दोस्ती और बेतकल्लुफी हो या ना हो).

{२} मुस्लिम; रावी हज़रत अबू हुरैरा रदी.

खुलासा- रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया तुम लोग जन्नत में नहीं जा सकते जब तक की मोमिन नहीं बनते, और तुम मोमिन नहीं बन सकते जब तक आपस में मुहब्बत ना करो, क्या में तुम्हें वो तरकीब ना बताउं जिस को अगर करो तो आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करने लगो? “आपस में

सलाम को फैलाओ”. इस रिवायत से मालूम हुआ की मुसलमान आपस में एक दूसरे से मुहब्बत करे और मुहब्बत से पेश आये, ये उनके ईमान व इस्लाम की चाहत है और उसका उपाय ये है की उनके बीच आपस में सलाम करने का आम रिवाज हो जाये, ये नुस्खा बहुत बेहतर नुस्खा है शर्त ये है की लोगों को सलाम का मतलब मालूम हो और अस्सलामुअलैकुम की रूह को जानते हो.